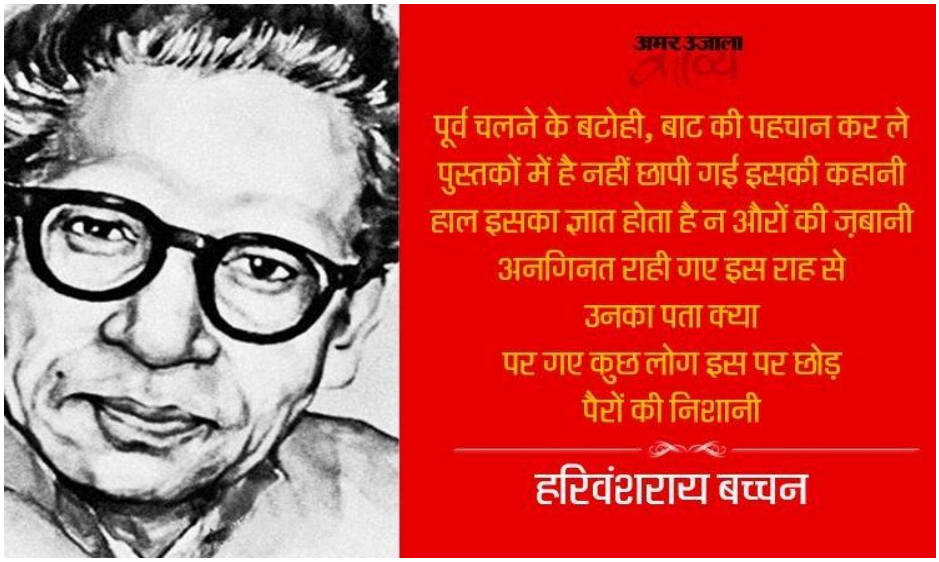

आत्मपरिचय-

श्री हरिवंश राय बच्चन

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ;
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

शब्दार्थ : **नाता = संबंध। वैभव = समृद्धि। पग=कदम। रोदन = रोना। राग = प्रेम। आग = जोश। भूप = राजा। प्रासाद = महल। निछावर = लुटाना। खडहर = ध्वस्त इमारत । भाग = हिस्सा।**

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसके रचनाकार विख्यात कवि डॉ हरिवंश राय बच्चन हैं।

प्रसंग : कवि इस काव्यांश में अपने और संसार के बीच के अंतर को स्पष्ट कर रहे हैं।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि मैं इस दुनिया से भिन्न अलग हूं जबकि यह दुनिया मुझसे भिन्न प्रकार की है। इसलिये इसके साथ मेरा कोई नाता संभव ही नहीं है। मैं अपनी कल्पना के रोज ही बहुत से संसार बनाता और मिटाता हूं। यह दुनिया धरती पर नित सुख और समृद्धि के साधनों को जुटाने में व्यस्त है, और मैं हूं कि अपने पैरों की ठोकर से ऐसी धरती को ही प्रतिदिन ठुकराया करता हूं।

अर्थात् धन-दौलत के पीछे भागने वाली दुनिया कवि को स्वीकार नहीं है। वह तो उसे ठुकराते रहते हैं।

कवि कहते है कि मैं जब रुदन करता हूं, तब उसमें भी प्रेम की अविरल धारा बहा करती है। मेरी वाणी भले ही शीतल हो, किंतु वह उन शब्दो का उच्चारण करती है, जिनमें प्रेम की आग होती है। संसार की विसंगतियों को जला डालने की उसमें क्षमता है। यद्यपि मेरा हृदय एक ध्वस्त इमारत की तरह है, फिर भी उसमे गहरा आकर्षण है । वह ऐसे प्रेम की इमारत है, जिस पर सम्राटों के आलीशान महल भी लुटाये जा सकें। तात्पर्य यह है कि मै उसी मूल्यवान प्रेम को मन मे बसाये हुआ हूँ।

पद सौंदर्य :

1 काव्यांश में वियोग रस है।

2 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' में विरोधाभास अलंकार है।

3 'बना-बना' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार किसे कहते हैं? जहां पर एक ही शब्द एक से अधिक बार , एक ही अर्थ में आये उसे पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार कहते हैं।

4 'मैं और, और जग और' की में यमक अलंकार है।

यमक अलंकार किसे कहते हैं? जहां पर एक ही शब्द की आवृत्ति बार-बार हो, परंतु हर बार उसका अर्थ भ्भिन्न हो, वहां पर यमक अलंकार होता है।

विशेष : कवि ने अपनी विशिष्ट स्थिति का चित्रण किया है।

प्रश्न : **(क) कवि और संसार के बीच क्या संबंध हैं?**

प्रश्न : **(ख) कवि और संसार के बीच क्या विरोधी स्थिति है**

प्रश्न : **(ग) 'शीतल वाणी में' आग लिए फिरता हूँ' -से कवि का क्या तात्पर्य है?**

प्रश्न : **(घ) कवि के पास ऐसा क्या है, जिस पर राजाओं के विशाल महल भी न्यौछावर हों?**

शेष अगली कक्षा में

ऋचा पाण्डेय

धन्यवाद

वर्तनी का विशेष ध्यान रखें